ISSN 2349-638x
Impact Factor 7.149

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 100

हिंदी साहित्य में संवैधानिक मूल्य

मुख्य संपादक
[illegible]

अतिथि संपादक
[illegible]
[illegible]

कार्यकारी संपादक
प्रा.डॉ.रणजीत जाधव
[illegible]

सह–संपादक
प्रा.डॉ.मा.ना.गायकवाड
[illegible]

SPECIAL ISSUE PUBLISHED BY
AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL
Peer Review & Indexed Journal I Impact factor 7.149
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com
Mob.8999250451

Scanned by TapScanner

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
1.	डॉ. मनोज पाण्डेय	समकालीन कथा साहित्य में संवैधानिक मूल्य	1
2.	प्रो. (डॉ) सतीश यादव	संवैधानिक मूल्यों के टूटने की कसक : 'राग दरबारी'	4
3.	डॉ. कुमार बनसोडे	समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिकता एवं मूल्य	11
4.	प्रा. अमोल रमेश इंगले	ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सपना' कहानी में व्यक्त धार्मिक भेदभाव का चित्रण	15
5.	डॉ.मा.ना.गायकवाड	बाइसवी सदी उपन्यास में संवैधानिक मूल्य	18
6.	प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले	वामनदादा कर्डक के काव्य में सामाजिक समता	21
7.	कैप्टन डॉ.प्रो.अनिता मधुकरराव शिंदे	'निर्माणों के पावन युग में', इस कविता में संवैधानिक मूल्य	24
8.	प्रो. डॉ. बबनराव रंभाजीराव बोडके	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में नव सामाजिक मूल्य	26
9.	डॉ.पवन नागनाथराव एमेकर	आशीर्वाद कहानी और संवैधानिक मूल्य	29
10.	प्रा.डॉ.विजय गणेशराव वाघ	हिंदी साहित्य में संवेधानिक मूल्य सूफीमत के परिप्रेक्ष्य में	31
11.	प्रा. डॉ. वसंत गाडे	समकालीन हिंदी कविता में मानव जीवन और बदलते संवैधानिक मुल्य	34
12.	डॉ. पुष्पा गोविंद गायकवाड	संत साहित्य में संवैधानिक मूल्य	40
13.	प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	हिन्दी दलित उपन्यासों में संवैधानिक मूल्य	47
14.	प्रा.बाळासाहेब संभाजी कावळे	गिरिराज किशोर के उपन्यास में लोकतंत्रिक मूल्य की समिक्षा	51
15.	प्रो. अशोक मर्डे	अधिकार एवं समता की प्रखर दहाड - 'गूंगा नहीं था मैं'	55

Scanned by TapScanner

वामनदादा कर्डक के काव्य में सामाजिक समता

-प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले,
हिंदी विभागाध्यक्ष, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्य,
गंगाखेड जि.परभणी-431514(महाराष्ट्र)

सदियों से हमारे सम्मुख यह यक्ष प्रश्न उपस्थित होता है कि, भारतीय समाज में विषमता क्यों है? मनुष्य के मन में एक दूसरे के प्रति विद्वेष की भावना क्यों है? मनुष्य का मनुष्य के प्रति अमानवीयता का व्यवहार क्यों होता है? समाज में ऊँच-नीचता की भावना क्यों है? समाज में जाति-भेद क्यों है? स्त्रियों के प्रति प्रतिबंध क्यों है? समाज में शोषण क्यों है? अर्थात इन सभी प्रश्नों के उत्तर हमारे भारतीय समाज परंपरागत सोच और जनमानस के गठन में परिलक्षित होते हैं। आज के घोर शिक्षित वैज्ञानिक युग में भी हमारे समाज में अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास, अवैज्ञानिक सोच को उपर्युक्त सभी बातें दृष्टिगोचर होती हैं। इन सब बातों को समाज से मिटाने के लिए प्रयास नहीं हुए हैं ऐसी बात नहीं है। इसके लिए कई महापुरुषों ने अपना भरकस योगदान दिया है। परंतु समाज एक ऐसा वर्ग भी कार्यरत है, जो इन बातों को समाज से समाप्त होने देना नहीं चाहता। और वह प्रबल हैं। समाज में समता, स्वातंत्र्य, बंधुता, न्याय, एकता, मानवीयता, शोषण मुक्त भारत की पेशकश हमारे कई महापुरुषों ने की हैं। यही नहीं डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरजी ने भी संविधान के माध्यम से इन मानवीय मूल्यों को प्रस्थापित करने की कोशिश की है। वामनदादा के पूर्व या समकालीन कवि-गायक, जलसाकारों कलाकारों में गोविंद आबाजी अहिरे, शा.घेगडे, शा.किसन फागूजी बनसोड, शा.भीमराव कर्डक, दलितानंद, प्रभाकर पोखरीकर, विजयानंद जाधव, गोपाल बाबा वलंकर, राजानंद गडपायले, लक्ष्मण राजगुरु आदि दिखाई देते हैं। हमें यहाँ केवल महाकवि वामनदादा कर्डक के काव्यालोकन द्वारा भारतीय समाज में उपरोक्त मूल्यों-तत्वों की प्रतिष्ठापना किस प्रकार हुई? इसे प्रस्तुत करना आलेख मूल उद्देश्य है।

वामनदादा कर्डक ने समता, स्वातंत्र्य, बंधुता, न्याय, धम्म, लोकतंत्र, महिला अधिकार, सत्य, अहिंसा, मानवता, अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास, बुवाबाजी, ढोंग, पाखंड, विज्ञानवाद और संविधान तथा प्रस्थापितों द्वारा अन्याय-अत्याचार, पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा मजदूर, किसान, गरीब जनता का शोषण आदि बातों का प्रकट रूप में चित्रण अपने काव्य साहित्य में किया हैं। यही नहीं इसका प्रचार-प्रसार अपनी शाहिरी, गायनकला के माध्यम से महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश भारत के आदि प्रदेशों में ताउम्र किया हैं।

समाज में समता स्थापित करने हेतु 'जाग उठो' कविता में वामनदादा मजदूर, किसान, गरीब, पिछड़े वर्ग को जागृत करने के लिए कहते हैं,

"जाग उठो, जाग उठो, जाग उठो;
आग बनके इस वतन के नाग उठो।
मेहनत का फल जो तुम्हें पाना है;
फल न मिले तो जलाने बाग उठो।।"1

इस तरह की तीव्र प्रतिक्रिया पूँजीवादी शोषण व्यवस्था के खिलाफ व्यक्त करते हैं। बल्कि इस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। मूलतः प्राकृतिक संसाधनों पर प्रबल वर्ग या उद्योगपतियों वर्ग सदियों से कुंडली मार बैठा हैं। उनके प्रति विद्रोही स्वर 'धरती हमारी है' कविता में मुखर होता है-

"धरती हमारी है, दौलत हमारी है;

Scanned by TapScanner

धरती के माटी में मेहनत हमारी हैं।"2

अर्थात प्राकृतिक संसाधनों जल , जंगल, जमीन पर अपना अधिकार वामनदादा जताते हैं। और शोषण के विरूद्ध अवाज उठाते हैं।

मानवीय अधिकारों का बोध व्यक्ति को तभी होता है जब वह शिक्षित होता है। इसलिए सबको शिक्षित होना अत्यावश्यक है। डॉ.आंबेडकरजी ने कहा है कि, 'शिक्षा यह बाघिन का दूध है' और जो इसे प्राशन करेगा वो अपने अधिकारों के प्रति निश्चित ही जागरूक होगा। इसलिए वामनदादा 'शिक्षा' कविता में लिखते हैं,

"शिक्षा दो शिक्षा दो, देश के सारे बच्चों को शिक्षा दो। जात न मानो, धरम न जानो,
भेद न मानो, सबको सारी शिक्षा दो।"3

ताकि उनके जीवन का तम दूर हो सके। अपना अच्छा जीवन बीता सके। साथ ही इसमें समता का भी संदेश मिलता है। समता प्रस्थापित करने हेतु वामनदादा 'तोड दो तोड दो' कविता में कहते हैं,

"तोड दो तोड दो तोड दो,
झूठे धरम के बंधन को अब तोड दो।
ये ऊँच-नीचता को अब तोड़ दो,
इंसा के नये नाते अब जोड़ दो,
ये दूर दूर रहना अब छोड़ दो।।"4

अर्थात सामाजिक समता की बात यहां कवि करते हैं। तो दूसरी ओर बंधुता, भाईचारे की बात करते हैं। समाज से भेदभाव मिटाने की बात करते हैं। वामनदादा ने लोगों में स्वाभिमानी चेतना भरने का काम भी किया है। 'समता की शॉल नीली', 'समता की तरफ' आदि में इस बात को पूरजोर तरीके से उन्होंने उठाया है। जुल्म-सितम, अन्याय-अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई हैं। जाति-पाँति के भेदभाव को मिटाने की हूँकार भरी है। और मानसिक गुलामी को दूर करने की कोशिश की है। वे 'इतने दिन गुलाम रहे, अब ना रहेंगे' द्वारा उक्त भाव को प्रकट करते हैं।

देश आजाद होकर सतर से भी अधिक साल हुए हैं पर यहां आम जनता की सच्ची आजादी अभी भी बाकी है। "हमारी आजादी की बात, यहाँ बाकी है" में वे पूरा ब्यौरा वर्णन करते हैं।

"डॉ.आंबेडकर कानून मंत्री थे तब 1948,अक्तूबर में हिंदू कोड बिल लोकसभा में प्रस्तुत किया।"5 और भारतीय महिलाओं को उनके मानवीय और पारिवारिक अधिकार दिलाने की पेशकश की। ठीक इसी बात को वामनदादा ने अपने काव्य का विषय बनाया। 'स्त्री मुक्ति' कविता के माध्यम से महिलाओं में जागृति लाने का प्रयास किया। "ना तोफों की जरूरत' में कवि बुध्द के सत्य अहिंसा, मानवता की बात भी कवि करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। व लिखते हैं,

"ना तोफों की जरूरत है न बम की जरूरत,
संसार को ना जुल्म सितम की जरूरत।।
ना खून की रंगेली उस कलम की जरूरत,
जिसमें जले जहाँ न उस एटम की जरूरत।।
सच बोले तो धरती को है, गौतम की जरूरत।।"6

अर्थात विश्व को युद्ध नहीं बल्कि बुध्द की आवश्यकता है। युद्ध विनाश है तो बुध्द स्वीकार से मानव कल्याण है।

Scanned by TapScanner

वामनदादा कर्डक के काव्य साहित्य का और भी विविध दृष्टिकोण से अध्ययन किया जा सकता है। उनके काव्य में उनकी व्यक्ति रेखाएं, बाबासाहब का चरित्र, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक, काव्य शास्त्रीय, भाषा, उनके काव्य में प्रतिमा और प्रतीक और विशेषत: "आंबेडकरवाद" आदि तत्वों को उनके काव्य में देखा-परखा जा सकता हैं। उपरोक्त तत्वों को वामनदादा की, 'दिल्ली दूर नहीं','भारत का कानून','बुध्द कहे','खुशी की बात','संसद में','वतन के लिए','गौतम के गांव में','जमाना बदलेगा','भला होगा','बढते जाएगा','नये सारे','नया बल','शाम का उजाला' आदि कविताओं में भी देखा-परखा जा सकता हैं।

काव्य, गीत-संगीत यह समाज प्रबोधन का प्रभावकारी माध्यम है। यह परंपरा अनेक वर्षों से निरंतर जारी है। उसमें विविध कलाओं का भी अपना मौलिक योगदान है। वामनदादा कर्डक ने भी अपनी गीत-गायन ,शाहिरी कला के माध्यम से समाज प्रबोधन किसी भी प्रकार की अभिलाषा, अपने स्वास्थ्य की परवाह किए बिना ताउम्र किया। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि, प्रोढ-शिक्षा अभियान, क्षयरोग, एड्स जैसी बीमारी आदि के निर्मूलन संबधी जनजागृति करते हुए वामनदादा दिखाई देते हैं। यह परंपरा आज भी बरकरार है। शासकीय विविध जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार अपनी गीत-गायन कला के माध्यम से किया जाता हैं। जिसका बहुत ही कम मात्रा में क्यों न हो शासन द्वारा मानदेय अदा किया जाता है।

संक्षेप में कहा ये जा सकता है कि, महाकवि वामनदादा कर्डक का काव्य शोषण मुक्त भारत का सपना देखता है। समता मूलक, जाति विरहित, सुख-शांति, अमन-चैन, खुशहाल जीवन व्यतीत करनेवाले, एकता और बंधुभाव से रहने वाले, स्त्री-पुरुष समानता युक्त समाज निर्माण हो। यह उसकी अभिलाषा निश्चित ही एक न एक दिन पूरी होंगी ऐसी हम आशा व्यक्त करते हैं।

संदर्भ:

1.जाग उठो-संपा. डॉ.अशोक जोंधले(पृ.78)
2.दिल्ली दूर नहीं-संपा. अजय जोंधले(पृ.22)
3.जाग उठो-संपा. डॉ.अशोक जोंधले(पृ.74)
4.बोल उठी हलचल-संपा. रविचंद्र हडसनकर(पृ.47)
5.भारतीय संस्कृति कोश-खंड-1,संपा.महादेव शास्त्री जोशी(पृ.384)
6.बोल उठी हलचल-रविचंद्र हडसनकर(पृ.70)

Scanned by TapScanner